III Paper आगम साहित्य को परिभाषित करते हुए इसका इतिहास प्रस्तुत करें।

आगम विशिष्ट ज्ञान के सूचक हैं जो प्रत्यक्ष तत्सदृश बोध से जुड़ा है। दूसरें शब्दों में भी कहा जा सकता है कि आवरक हेतुओं या कर्मों का अपगम से जिनका ज्ञान सर्वथा निर्मल एवं शुद्ध हो गया हो ऐसे आप्तपुरुषों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का संकलन आगम है।

आगमों के रूप में जो प्रमुख साहित्य हमें आज प्राप्त है वह अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर द्वारा भाषित और उनके प्रमुख शिष्यों - गणधरों द्वारा संग्रथित है। आचार्य भद्रबाहु ने लिखा है - 'अर्हत' अर्थ भाषित करते हैं, गणधर धर्मशासन या धर्मसंघ के हितार्थ निपुणतापूर्वक सूत्र रूप में उसका ग्रथन करते हैं, यों ही सूत्र का प्रवर्तन होता है। इसका तात्पर्य यह हुआ है कि भगवान महावीर ने जो भाव, अपनी देशना में व्यक्त किये वे गणधरों द्वारा शब्दबद्ध किये गये।

कहा जाता है कि समस्त श्रुत - ज्ञान के अन्तिम उत्तराधिकारी श्रुतकेवली भद्रबाहु हुए। इनका समय महावीर के निर्वाण के दो सौ वर्ष के बाद चन्द्रगुप्त के राज्यकाल में माना जाता है। उससमय मगध में भीषण अकाल पड़ा था जो 12 वर्षों तक रहा। भद्रबाहु श्रुतकेवली अनेक जैन मुनियों के साथ मुनिचर्या निर्वाह के हेतु दक्षिण भारत को चले गये। इस उथल-पुथल में जैन आगम का संरक्षण कठिन हो गया। जो मुनि उत्तर भारत में चले गये वे शिथिल हो गये और श्वेतवस्त्र धारण करने लगे। तभी से जैन सम्प्रदाय दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया।

वीर- निर्वाण 980 वर्ष व्यतीत होने पर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण के नेतृत्व में वलभी नगर में एक मुनि सम्मेलन बुलाया गया। इन संघ-समवाय में विविध पाठान्तर और वाचना भेद का समन्वय करके माथुरी वाचना के आधार पर आगमों को संकलित कर लिपिबद्ध किया गया। श्वेताम्बर सम्प्रदाय द्वारा मान्य वर्तमान आगम इसी संकलना के परिणाम है। इस वाचना या संकलना 11 अंगों के अतिरिक्त अन्य ग्रंथ भी जो कि उस काल तक रचे चुके थे। इस साहित्य को 11 अंग, 12 उपांग, 6 छेद सूत्र 4 मूलसूत्र, 10 प्रकीर्णक और 2 चूलिका इस प्रकार 45 ग्रंथों में व्यवस्थित किया गया है। इन ग्रंथों की

भाषा - - - - - - P.T.O. - - -

यह सत्य है कि इन आगमों की भाषा भगवान महावीर की अर्धमागधी नहीं है। जैन मुनि अनेक प्रदेशों से आकर उस सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे। और वे उन-उन प्रदेशों के भावनाओं से प्रभावित थे। महावीर के निर्वाण से वलभी वाचना तक एक हजार वर्ष का लम्बा समय बीत भी गया था। इस बीच में मूल-भाषा में कई मिश्रण और कई परिवर्तन अवश्य हुए होंगे। यही कारण है कि आगमों में परस्पर एक ही ग्रंथ के भिन्न-भिन्न अंशों में और कहीं-कहीं एक ही वाक्य में भाषा और शैली का भेद सुस्पष्ट दिखलाई पड़ता है।

ये आगम गद्य और पद्य दोनों में मिलते हैं। दार्शनिक और सैद्धान्तिक विषयों का विवेचन सूत्र शैली में किया गया है। दृष्टान्तों, कथाओं और छन्दोबद्ध उपदेशों में कल्पना की रमणीयता के साथ अन्य काव्य तत्वों की कमी नहीं है। छंद मधुर हैं, गेय तत्व की भी प्रचुरता है तथा रूपक, उपमा और उत्प्रेक्षा के चमत्कार भी वर्तमान है।

संस्कृति और समाज के इतिहास का यथार्थ परिज्ञान आगम साहित्य द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। कला और साहित्य के अनेक प्राचीन रूप इसमें सुरक्षित हैं। जीवन और जगत के विविध अनुभवों की जानकारी इस साहित्य में निहित है। प्रबन्ध काव्यों के तत्त्व वस्तुवर्णन, इतिवृत्ति और संवाद आगम साहित्य में प्रचुर परिमाण में पाये जाते हैं। अतः प्रबन्धों की परम्परा को व्यवस्थित रूप देने के लिए आगम साहित्य सम्बन्ध जोड़ना उपयुक्त है।